P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-12* March- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जनपद आजमगढ़ (उ0प्र0) में ग्रामीण औद्योगीकरण का भौगोलिक विश्लेषण: एक प्रतीक अध्ययन

Geographical Analysis of Rural Industrialization in Azamgarh (UP): A Symbol Study

Paper Submission: 10/03/2020, Date of Acceptance: 26/03/2020, Date of Publication: 29/03/2020

सुनील कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
पीपीगंज, गोरखपुर,
(उ.प्र.) भारत

देवेन्द्र कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
रामजी सहाय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
रूद्रपुर, देवरिया,
(उ.प्र.) भारत

सारांश

ग्रामीण औद्योगीकरण, का तात्पर्य, ग्रामीण अंचलो में स्थित उद्योगों के पुनरूद्धार भी है। इस आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधन, कृषि संसाधन, वन संसाधन, पशु संसाधन, खनिज संसाधन और अन्य संसाधनों के आधार पर ग्रामीण उद्योगो की स्थापना ग्रामीण क्षेत्रों में कम पूंजी और कम तकनीकी सुविधा के बावजूद पूरी की जाती है। जो क्षेत्रीय जनसंख्या की आवश्यकता को तुरन्त पूरा करते है। हांलाकि ग्रामीण उद्योगों के विकास हेतु अध्ययन क्षेत्र में संसाधनो का अभाव है। क्योंकि उद्योगों के लिए संसाधन बनाने वाली कृषि फसलों में गन्ना, तिलहन, दलहन आदि फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र और उत्पादन दोनों कम हैं। क्योंकि 96 प्रतिशत से अधिक शस्यगत भूमि गेंहूँ और धान के अन्तर्गत है। जो खाद्यान है। क्षेत्र में वन संसाधनों का अभाव है। जबकि पशु संसाधन क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। लेकिन पशु संसाधनों के आधार पर कोई भी उद्योग विकसित नही है। पारिवारिक और कुटीर उद्योग स्तर पर दूध–दही का उत्पादन और स्थानीय वितरण होता है। केवल आजमगढ़ नगर मुख्यालय के पास सहकारी दुग्ध संस्था, पराग का प्रसंस्करण केन्द्र है। जिससे दुग्ध उत्पाद निर्मित होता है। जनपद में अधिकांश दुग्ध उत्पादों की खपत मिठाई के उद्योगों में होती है। इसलिए दुग्ध उत्पादों के आधार पर यहाँ औद्योगिक विकास की सम्भावनाएं तो है, लेकिन अनेक समस्याओं के कारण अधिक डेरी उद्योग विकसित नही हो पाया है। खनिज संसाधनों की दृष्टि से यहाँ केवल बालू और सीमित मात्रा में चीनी मिट्टी ही मिलती है। इसीलिए इनके आधार पर ईट भट्ठा उद्योग और सीमित स्तर पर मिट्टी के बर्तन बनाने के उद्योग ग्रामीण उद्योग के रूप में है। इससे स्पष्ट होता है कि जनपद में जितने भी ग्रामीण उद्योग हैं, वे मांग पर आधारित है। और उनके लिए कच्चा माल बाहरी स्रोतो से मिलता है।

Rural industrialization also means the revival of industries located in rural areas. On this basis, rural industries are established on the basis of available resources, agricultural resources, forest resources, animal resources, mineral resources and other resources in rural areas, despite less capital and less technical facilities in rural areas. Which meet the requirement of regional population immediately. However, there is a lack of resources in the study area for the development of rural industries. Because in agricultural crops that make resources for industries, both area and production under sugarcane, oilseeds, pulses etc. are less. Because more than 96 percent of the cultivated land is under wheat and paddy. Which is food. The area lacks forest resources. While animal resources are important in the field. But no industry is developed on the basis of animal resources. Milk-yogurt is produced and localized at the family and cottage industry level. Only near the Azamgarh city headquarters is the co-operative milk institution, the pollen processing center. From which milk products are produced. Most of the milk products in the district are consumed by the sweets industries. Therefore, there is a possibility of industrial development on the basis of milk products, but due to many problems, more dairy industry has not been developed. From the point of view of mineral resources, only sand and limited quantity of ceramic is available here. Therefore, based on these, the brick kiln industry and pottery making industry on a limited level is in the form of rural industry. This shows that all the rural industries in the district are based on demand. And the raw material for them comes from external sources.

मुख्य शब्द : धातुयें, मरम्मत सम्बन्धी उद्योग, मशीनों के कल–पुर्जे, कृषि यन्त्रों का निर्माण, श्रमिकों में बेरोजगारी और विपन्नता इत्यादि।

प्रस्तावना

भौगोलिक रूप में औद्योगीकरण का तात्पर्य क्षेत्र विशेष में क्रमिक रूप में विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विकास से है। अर्थात् समयानुसार जब विभिन्न प्रकार के उद्योगों की संख्या में वृद्धि, क्षेत्रीय विस्तार में वृद्धि होती है, तो वही औद्योगीकरण कहा जाता है। वास्तव में यह औद्योगीकरण मानव द्वारा किये जाने वाले प्राथमिक कार्य के बाद द्वितीयक कार्य है। जिसमें मनुष्य प्राथमिक संसाधनों का रूपान्तरण करके परिवर्तित उत्पादन प्राप्त करता है। इसी सन्दर्भ में मानव सभ्यता के विकास के साथ ही उद्योगों के विकास का इतिहास भी अस्तित्व में आया। अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए मनुष्य ने प्रागैतिहासिक काल में पत्थरों को तराशा और उसका प्रयोग करके मनुष्य विभिन्न संसाधनों का द्वितीयक उत्पादन प्राप्त करने लगा। पाषाण युग के बाद मनुष्य ने धातुओं को गलाकर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना प्रारम्भ किया और धीरे–धीरे इसी प्रक्रिया से क्षेत्र विशेष में उद्योगों और औद्योगीकरण का विकास हुआ। इस प्रकार के उद्योगों के विकास में क्षेत्रीय संसाधन महत्वपूर्ण थे और इसके साथ–साथ जब मनुष्य की आवश्यकता बढ़ने लगी, तो क्रमिक रूप से आवश्यकता पर आधारित उद्योगों का भी विकास हुआ। इस तरह उद्योग समान आर्थिक वस्तुएं और जीवनोपयोगी सेवाएं उत्पन्न करता है।[1] अर्थात् उद्योग प्राथमिक कार्यों से पदार्थ लेकर उनको संसोधित करते हैं तथा तृतीयक एवं चतुर्थक क्रियाओं से सहयोग लेकर विभिन्न प्रकार के उत्पादों को उत्पन्न करते हैं। जिसका मनुष्य अपने कार्यों में प्रयोग करता है।[2] इस तरह उद्योग की परिधि में वे समस्त उपकरण सम्मिलित हैं, जिसमें नियाजकों और नियोजितों के सहयोग से मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए एक व्यवस्थित गतिविधि के रूप में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाता है।[3] यह उल्लेखनीय है कि औद्योगिक विकास की यह प्रक्रिया प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक प्रगतिशील है। इससे कालिक और क्षेत्रीय रूप में औद्योगीकरण की प्रक्रिया में अन्तर मिलता है। इसीलिए औद्योगीकरण की प्रक्रिया और उद्योगों को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रायः उद्योगों की संख्या, आकार और उत्पादन में वृद्धि होती है, तो उद्योग की भौगोलिक स्थिति या उससे उद्योग स्थापित होकर नगरीकरण में वृद्धि करते हैं। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में जहां स्थानीय संसाधनों पर ही ग्रामीणों की आवश्यकता निर्भर होती है। वहां पर छोट–छोटे कम पूंजी और स्थानीय तकनीकी पर आधारित उद्योग भी विकसित होते हैं। इनको ग्रामीण उद्योग भी कहा जाता है। अर्थात् ग्रामीण उद्योग से तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्र में स्थिति लघु एवं कुटीर उद्योगों से हैं, जो स्थानीय संसाधनों पर आधारित होते हैं। इनमें कम पूंजी का विनियोग करके जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। स्थानीय संसाधनों में कृषि उत्पादन, वनोत्पाद एवं पशुउत्पाद महत्वपूर्ण हैं। स्थानीय आवश्यकता के अनुसार इनसे विभिन्न सामानों का उत्पादन ग्रामीण क्षेत्रों में ही होता है। इसीलिए इन्हें ग्रामीण उद्योग कहते हैं।

विशेष रूप में लघु और कुटीर उद्योग जिनमें उद्योगों में लगने वाली मशीनों पर व्यय 25 लाख रूपये से 5 करोड़ तक हो और सेवा के संदर्भ में यह सीमा 10 लाख से लेकर 2 करोड़ तक हो, ऐसे सभी लघु एवं कुटीर उद्योग ग्रामीण उद्योग में आते हैं।[4] ऐसे सभी उद्योग गांवों अथवा कस्बों में होते हैं। क्षेत्र विशेष के अनुरूप इनमें हथकरघा, रेशमकीट पालन, टोकरी उद्योग, गेहूं पीसने का उद्योग, चावल और दाल सम्बन्धी उद्योग, दुग्ध पदार्थों पर आधारित उद्योग तथा विभिन्न यन्त्रों के मरम्मत सम्बन्धी उद्योग महत्वपूर्ण हैं। मुख्य रूप से ग्रामीण उद्योगों में कृषि आधारित उद्योग तथा मांग पर आधारित उद्योग मिलते हैं। कृषि आधारित उद्योग तिलहन, दलहन, खाड़सारी, कागज, तम्बाकू, पशु उत्पाद का कच्चे माल के रूप में प्रयोग करते हैं जबकि मांग पर आधारित उद्योग आवश्यकतानुसार विभिन्न मशीनों के कल–पुरजे, कृषि यन्त्रों का निर्माण तथा मरम्मत आदि पर आधारित होते हैं।

इस तरह ग्रामीण औद्योगीकरण का तात्पर्य ग्रामीण अंचलों में उद्योगों की स्थापना अथवा पहले से स्थापित उद्योगों के पुनरूद्धार और विकास से है। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध क्षेत्रीय संसाधनों एवं सुविधाओं के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों को लगाने उन्हें विकसित करने और औद्योगीकरण के स्तर को उच्च करने का प्रयास किया जाता है।[5] इस प्रकार बड़े पैमाने के उद्योगों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी छोटे एवं लघु उद्योगों का विकास आवश्यक है। इसीलिए 1991 की लघु औद्योगिक नीति में ग्रामीण औद्योगीकरण पर विशेष बल दिया गया है। क्योंकि ग्रमीण औद्योगीकरण से ही श्रमकों में बेरोजगारी और विपन्नता जैसी स्थितियां दूर हो सकती हैं। और सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र में संसाधनों का समुचित उपयोग करके रोजगार के स्तर को भी बढ़ाया जा सकता है।[6]

ग्रामीण उद्योगों के लिए उपलब्ध संसाधन :–

ग्रामीण उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्धित होते है। इसलिए वे स्थानीय संसाधनों पर आधारित होते हैं, जिसमें कृषि संसाधन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही वन, वनों से प्राप्त विविध पदार्थ, पशुउत्पाद, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होने वाले गौड़, खनिज प्रमुख संसाधन है। सम्भावित रूप से ग्रामीण उद्योग के संसाधनों को निम्न भाग में बांट सकते हैं।

1. कृषि संसाधन :–

इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की फसलें धान, गेहूं, मक्का से लेकर गन्ना, तिलहन, अनेक प्रकार की सब्जियां आदि कई प्रकार के उद्योगों को विकसित कर सकती है। इसी के साथ ही विभिन्न प्रकार के फल आम, लीची, आवला, पपीता, अमरूद, नीबू, खजूर, सिघांड़ा, मसाले आदि संसाधन आधार के रूप में है।

2. वन संसाधन :–

इसमें विभिन्न प्रकार की लकड़ी, बांस, वेत, सहतूत आदि सम्मिलित हैं।

3. पशु संसाधन :–

इसके अन्तर्गत दूध, मांस, हड्डी, चमड़ा आदि कच्चे माल के रूप में है।

4. खनिज संसाधन :–

ग्रामीण क्षेत्रों में मिलने वाली भिन्न प्रकार की मिट्टिया, बालू, पत्थर, गौड़ खनिज आदि।

5. अन्य संसाधन :–

इसके अन्तर्गत जल, ऊर्जा, अनेक पकार के अवस्थापना तत्व परिवहन, पूजी आवश्यक है।

इस तरह ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित उद्योग प्राथमिक रूप में स्थानीय, प्राथमिक संसाधनों का उपयोग करते हैं जबकि स्थानीय मांग के अनुसार ऐसे उद्योग भी वहाँ विकसित करते है, जो अन्य क्षेत्रों के उत्पादित सामानों का कच्चे माल के रूप में उपयोग करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण उद्योगों के लिए उपलब्ध संसाधन आधार :–

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़, मध्यवर्ती गंगा मैदान का जलोढ़ निक्षेप से निर्मित एक समतल मैदानी भाग है। जहाँ का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक है। इसीलिए कृषि जीवन निर्वाहक है। परिणामस्वरूप कृषि संसाधन भी खाद्यान्न प्रधान है। बढ़ती हुई जनसंख्या के सन्दर्भ में खाद्यान्न उत्पादन भी अधिक नहीं होता है। जिससे उनपर आधारित उद्योग धन्धों का विकास सीमित है। प्रायः यहाँ पर दैनिक उपयोग हेतु लघु उद्योग के रूप में कृषि संसाधनों पर आधारित चावल, दाल, आटा के कारखाने, गुड़ अथवा खाड़सारी के कारखाने, तिलहन पर आधारित तेल के कारखाने विकसित है। कहीं–कहीं वनोंत्पाद के रूप में लकड़ी पर आधारित विभिन्न प्रकार के उद्योग, पशुत्पादों पर आधारित उद्योग भी विकसित है। कृषि के अतिरिक्त अन्य संसाधनों में मिट्टी के वर्तन बनाने के उद्योग, चीनी मिट्टी पर आधारित उद्योग बालू उत्खनन आदि उद्योग भी विकसित हैं। इस प्रकार भौगोलिक दृष्टि से आजमगढ़ जनपद औद्योगिक रूप में पिछड़ा हुआ है। इसके लिए उत्तरदायी कारणों में स्थानीय संसाधनों में कृषि संसाधनों का सीमित उत्पादन, ग्रामीण क्षेत्रों में पूँजी का अभाव, समुचित विपणन तन्त्र का अभाव, ऊर्जा का अभाव आदि महत्वपूर्ण है।

आजमगढ़ जनपद में औद्योगिक दृष्टिकोण से उपलब्ध विभिन्न कृषि फसलों का क्षेत्रीय विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि यहाँ दलहन, तिलहन, फल और सब्जियां औद्योगिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। इनके आधार पर विभिन्न प्रकार के प्रसंस्करण उद्योग स्थापित हो सकते हैं।

औद्योगिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण फसले

सामान्य रूप में अध्ययन क्षेत्र में कृषि फसलों के अन्तर्गत, धान, गेहू और मक्का जैसे खाद्यान्न कुल शस्यगत भूमिका 80 प्रतिशत से अधिक, गन्ना 5.6 प्रतिशत शेष, लगभग 14 प्रतिशत में तिलहन, दलहन और सब्जियां आती हैं। इस तरह यहाँ इनका प्रत्यक्ष उपभोग होता है। परिणामस्वरूप खाद्यान्न अतिरेक अथवा बचत कम होती है। भौगोलिक दृष्टिकोण से जिन क्षेत्रों में खाद्यान्न अतिरेक अधिक होगा, उन्हीं क्षेत्रों में ग्रामीण उद्योगों के लिए कच्चे माल के रूप में खाद्यानों का प्रयोग होगा। खाद्यान अतिरेक ज्ञात करने के लिए अध्ययन क्षेत्र में निम्न सूत्र का प्रयोग करके विकास खण्ड के अनुसार अतिरेक ज्ञात किया गया है।

$$S/P = A - R$$

$$A = \text{Total Agricultural Pr oduction}$$

$$R = \text{Total Annual Re quirement}$$

$$R = \frac{9Kg \times 365 \times \text{Total Population}}{100}$$

उपरोक्त सूत्र के अनुसार आजमगढ़ जनपद में खाद्यान अतिरेक है। क्षेत्रीय आधार पर महराजगंज, हरैया, जहानागंज, मार्टिनगंज, ठेकमा, मेहनगर, तरवा और पल्हना विकासखण्डों में खाद्यान अतिरेक है। जो एक तरह से ग्रामीण औद्योगीकरण के विकास के लिए उपयुक्त है। इसीलिए इन विकास खण्डों में खाद्यानों पर आधारित छोटे–छोटे उद्योग जैसे आटा चक्की, राइस–हालर आदि स्थापित है।

खनिज संसाधन

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में खनिज संसाधन नहीं मिलते हैं। खनिजों के नाम पर केवल मिट्टी और बालू कहीं–कहीं उपलब्ध है। मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए उपर्युक्त मिट्टी आजमगढ़ नगर मुख्यालय से पश्चिम निजामबाड, तहबरपुर, फरीह आदि में पायी जाती है। निजामबाड में मिट्टी के बर्तन का उद्योग मुगल काल से ही प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में विपणन की सुविधा का विस्तार करके इस उद्योग को बढ़ाया जा सकता है।

इसी तरह बिलरियागंज, महराजगंज, अजमतगढ़ के पास चीनी मिट्टी मिलती है। जिसके आधार पर वहा कप, प्लेट का निर्माण होता है। लेकिन वह सीमित महत्व का है, गौड़ खनिजो में बालू यहां मिलता है, जो अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में घाघरा के किनारे से निकाला जाता है। इसके उत्पादक क्षेत्रों में लालघाट, दोहरी घाट, महराजगंज, रौनापार पमुख है। बालू का उत्खनन करके भवन निर्माण हेतु विपणन किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में औद्योगिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण संसाधनों का विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण औद्योगीकरण हेतु विभिन्न प्रकार के क्षेत्रीय संसाधन यहां उपलब्ध हैं लेकिन सीमित उत्पादन, जनसंख्या का अधिक दबाव, पूंजी और ऊर्जा की कमी, अवस्थापना सुविधाओं का अभाव, परिवहन और बाजार के अभाव के कारण स्थानीय संसाधनों पर आधारित ग्रामीण उद्योग विकसित नहीं हो पा रहे हैं। इसलिए नवाचारों के प्रसार, पूंजी, और ऊर्जा की उपलब्धता निश्चित करके विभिन्न प्रकार के उद्योगों को विकसित किया जा सकता है। जनपद में उद्योगों से सम्बन्धित सूचनाओं और आकड़ो के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ कृषि और प्राथमिक संसाधनों पर आधारित ग्रामीण उद्योग बहुत कम संख्या में है। जबकि

मांग पर आधारित और वाहय संसाधनों के अनुरूप ग्रामीण उद्योगों की संख्या अधिक है।

ग्रामीण उद्योग और उनका वितरण

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में ग्रामीण उद्योगों का प्रारम्भ यद्यपि प्राचीन काल से माना जाता है। लेकिन मुगल काल में मुस्लिमों के प्रभाव के आधार पर हथकरघा उद्योग प्रारम्भ हुआ। और आज भी यह विकसित होता हुआ ग्रामीण उद्योग है। इसके अतिरिक्त कुटीर उद्योग स्तर पर हथकर्घा से विभिन्न प्रकार के वस्तु निर्मित किये जाते हैं। वर्तमान समय में इसका उत्पादन मुबारकपुर, अजमतगढ़, जीयनपुर, जहानागंज, सरायमील, फूलपुर, आजमगढ़ में हो रहा है। विभिन्न प्रकार के उत्पादनों में साड़ियां, दरी, कालीन, कपड़े महत्वपूर्ण हैं। यह उद्योग सामान्यतया तथा मुस्लिम सम्प्रदाय से अधिक सम्बन्धित है। पारिवारिक आधार पर संचालित होने वाले इस उद्योग में स्थानीय मजदूर कार्य करते है। इस उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में सूत की कमी महत्वपूर्ण है। इसकी पूर्ति के लिए मऊ में दो सूती मिले स्थापित की गयी थीं लेकिन विभिनन कारणों से वे भी बन्द हो गयी हैं। इसीलिए हथकर्घा उद्योग में कार्यरत बुनकरों के लिए अनेको समस्याए उत्पन्न हो रही है। इस पिछड़े क्षेत्र में ग्रामीण औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए 1975 में आजमगढ़ नगर में औद्योगिक आस्थान की स्थापना की गयी, छोटे पैमाने के कई उद्योग भी वहां विकसित किये गये, लेकिन समय के साथ आज उद्योगों की संख्या घटती जा रही है। 1990 में यहा पंजीकृत कारखानों की संख्या 22 थी, जो वर्तमान समय में केवल 12 रह गयी है। इस तरह क्षेत्रीय संसाधनों पर आधारित विभिनन प्रकार के ग्रामीण उद्योग जो यहा विकसित हैं, उनकी संख्या 312 है। जिसमें 944 व्यक्ति कार्यरत है। और कुल पूंजी का विनियोजन 13391500 है। इनमें सर्वाधिक उद्योग कृषि पर आधारित है। इसके अतिरिक्त इंजिनीयरिंग और मरम्मत संम्बन्धी उद्योगों तथा साइकिल और आटो रिपेयरिंग उद्योग का स्थान है। विभिन्न प्रकार के ग्रामीण उद्योग उनमें लगी हुई पूंजी, और कार्यरत मजदूरों का विवरण तालिका संख्या–0.1 में दिया गया है।

तालिका संख्या – 0.1

आजमगढ़ जनपद में ग्रामीण उद्योग और उनका वर्गीकरण वर्ष–2013

क्रमांक	उद्योग	संख्या	पूंजी	रोजगार
1.	कृषि आधारित उद्योग	54	4224000	179
2.	खाद्य प्रसंस्करण	10	436000	27
3.	वन आधारित उद्योग	46	748000	145
4.	पशु आधारित उद्योग	04	125000	15
5.	खनिज आधारित उद्योग	05	158000	17
6.	वस्त्र आधारित उद्योग	19	512000	69
7.	इंजीनियरिंग उद्योग	66	2608000	180
8.	आभूषण निर्माण उद्योग	21	962000	53
9.	साइकिल एवं आटो रिपेयरिंग उद्योग	35	808000	93
10.	इलेक्ट्रानिक रिपेयरिंग उद्योग	15	243500	30
11.	शिल्प कला उद्योग	02	40000	08
12.	सेवाएं	18	1107000	57
13.	अन्य क्षेत्रीय संसाधनों पर आधारित उद्योग	15	1298000	55
योग	**13**	**312**	**13391500**	**944**

उपरोक्त तालिका संख्या–0.1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनपद में कुल 312 उद्योगों में कृषि आधारित और प्रसंस्करण उद्योग के अन्तर्गत 64 उद्योग हैं। इनमें 200 से अधिक व्यक्ति कार्यरत हैं। जबकि वनो पर आधारित अथवा फर्नीचर उद्योगों की संख्या 46 है। जिसमें कुल 145 व्यक्ति कार्यरत हैं। और 750000 रूपये की पूंजी लगी है। इसके बाद छोटे–बड़े उद्योगों की संख्या 66 है। जिसमें 180 व्यक्ति कार्यरत है। और 260000 से उपर की पूजी लगी हुई है। साइकिल और आटो रिपेयरिंग की संख्या 35 है। जिसमें 93 व्यक्ति कार्यरत हैं और कुल 8 लाख रूपये से उपर की पूंजी लगी है। वस्त्र आधारित उद्योगों की संख्या 19 है। जिसमें 69 व्यक्ति कार्यरत हैं और 5 लाख से उपर अधिक पूंजी का विनियोजन है, जबकि आभूषण निर्माण उद्योग 21 हैं। जिनमें 9 लाख रूपये से अधिक पूंजी लगी है और 53 व्यक्ति कार्यरत हैं।

इस तरह स्पष्ट है कि आजमगढ़ जनपद में इस समय 312 उद्योग कार्यरत हैं। इनमें सर्वाधिक उद्योग इंजीनियरिंग से सम्बन्धित हैं। जो मांग पर आधारित हैं। विशेष रूप से कृषि यंत्रों का निर्माण, विभिन्न प्रकार की मशीनों और कलपुर्जों का निर्माण इसके अन्तर्गत होता है। कृषि प्रधान अर्थतन्त्र होने के कारण इन उद्योगों की संख्या अधिक है और विकास की संम्भावनाएं अधिक हैं। इनसे सम्बन्धित बड़े औद्योगिक केन्द्र आजमगढ़, सरायमीर, फूलपुर, जीयनपुर, मुबारकपुर, मेहनगर, लालगंज आदि है।

दूसरे स्थान पर कृषि आधारित उद्योग हैं इनमें चावल मिलें, खाद्य तेल की मिलें, गेहूं की पिसाई के केन्द्र, विभिन्न खाद्य पदार्थों, बेकरी से सम्बन्धित उद्योग महत्वपूर्ण हैं। इनके लिए स्थानीय कच्चा माल, बाजार और परिवहन की सुविधा उपलब्ध है। जिससे कृषि आधारित उद्योग के विकास की भी अधिक सम्भावना है।

तीसरे स्थान पर वनों पर आधारित फर्नीचर सम्बन्धित उद्योग हैं, जो जनपद के हर छोटे–बड़े बाजार और कस्बे में विकसित हैं। गृह निर्माण, फर्नीचर आदि की मांग अधिक होने के कारण इन उद्योगों का विकास तेजी से हो रहा है। इनके सामने आने वाली कठिनाइयों में कच्चे माल का अभाव, अधिक लागत, कुशल श्रम का अभाव आदि

महत्वपूर्ण है। जबकि मांग पर आधारित उद्योगों में साइकिल, मोटरसाइकिल, स्कूटर से सम्बन्धित मरम्मत कार्य भी महत्वपूर्ण ग्रामीण उद्योग हैं। लगभग जनपद के प्रत्येक कस्बे अथवा बाजार केन्द्रों में ऐसे उद्योग कार्यरत हैं। आजमगढ़, फूलपुर, सरायमीर, लालगंज, मेहनगर, जीयनपुर आदि में इनकी संख्या अधिक है।

अन्य गौड़ उद्योगों में पशु उत्पादों पर आधारित उद्योग 4, खनिज आधारित उद्योग 05, शिल्पकला उद्योग 02, सेवायें 18 हैं। इस तरह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों में तेजी से विकसित होते हुए उद्योग फर्नीचर उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग, साइकिल एवं आटो उद्योग जिनकी संख्या कुल उद्योगों का लगभग 50 प्रतिशत है। यहां कृषि संसाधन महत्वपूर्ण है लेकिन इस पर आधरित खाद्यान्न सम्बन्धित उद्योग, तिलहन, दलहन और प्रसंस्करण उद्योग बहुत ही कम हैं। इनके विकास की सम्भावनाएं अधिक हैं। लेकिन इसके लिए अधिक पूंजी विनियोजन, कच्चे माल की पर्याप्त सुविधा, कृषि विविधिकरण, सरकारी प्रोत्साहन और नवाचारों तथा तकनीकी निवेश आवश्यक है।

ग्रामीण उद्योगों का क्षेत्रीय वितरण :–

उद्योग विभाग द्वारा प्रदत्त सूचनाओं के आधार पर ज्ञात होता है कि जनपद में विकसित कुल 312 ग्रामीण उद्योगों की 193 केन्द्र हैं, जिनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र पल्हनी विकास केन्द्र में आजमगढ़ नगर है। यहां स्थापित उद्योगों की संख्या 46 है। यहां आजमगढ़ मुख्यालय उससे सटा हुआ स्टेशन रोड, हाफिजपुर, शाहगढ़ और सिधारी विभिन्न उद्योगों के केन्द्र हैं। यहां औद्योगिक केन्द्रीकरण के कारणों में आजमगढ़ नगर मुख्यालय का होना, पूंजी की सुविधा, विभिन्न क्षेत्रों से सीधे अवागमन की सुविधा, मांग आपूर्ति में आसानी होने के कारण अनेक प्रकार के उद्योग संचालित हैं। जनपद में दूसरा महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र मेंहनगर है। जहां 24 उद्योग स्थापित हैं। आजमगढ़ नगर मुख्यालय के दक्षिणांचल में स्थित मेंहनगर एक महत्वपूर्ण कस्बा है। यहां से इलाहाबाद, वाराणसी पूर्व में गाजीपुर, उत्तर में आजमगढ़ मुख्यालय से सड़क सम्बद्धता अधिक है। इसीलिए यहां इंजीनियरिंग उद्योग और कृषि पर आधारित उद्योगों की संख्या अधिक है। तथा इसको पिछड़े अर्थतन्त्र में स्थित होने के कारण बाजार की सुविधा भी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है।

तीसरा महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र फूलपुर है, जो आजमगढ़–लखनऊ–सुल्तानपुर मार्ग पर स्थित है, यहां भी मांग पर आधारित उद्योगों की संख्या अधिक है। विशेष रूप से कृषि यंत्रों के निर्माण और मरम्मत तथा वाहन सम्बन्धी उद्योगों की संख्या अधिक है। आजमगढ़–इलाहाबाद मार्ग पर स्थित जीवली बाजार भी महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। यह जौनपुर के गौरा बादशाहपुर से सटा हुआ है। पिछड़े अर्थतन्त्र में स्थित होने के कारण यहां कृषि सम्बन्धी उद्योगों का तेजी से केन्द्रीकरण हुआ है। इनमें कृषि यंत्र मरम्मत और कलपुर्जों का निर्माण तथा तिलहन पर आधारित खाद्य तेल उद्योग केन्द्रित हैं। जनपद में अन्य महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्रों में मोहम्मदपुर, बनगांव, मनकाडीह, निजामाबाद, मार्टिनगंज, ठेकमा, सिंहपुर, गोसाई बाजार, जीयनपुर, रौनापार, महराजगंज, खालिसपुर, सरदहा, अजमतगढ़, खरिहानी उल्लेखनीय है। तालिका संख्या–0.2 तथा मानचित्र संख्या–0.1 से आजमगढ़ जनपद में विभिन्न औद्योगिक केन्द्रों के वितरण का अध्ययन किया जा सकता है।

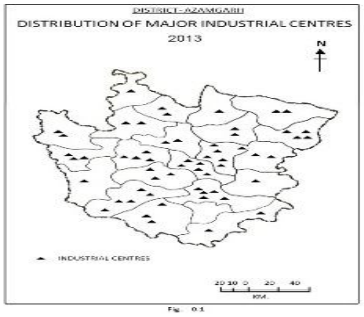

तालिका संख्या–0.2

जनपद आजमगढ़ में मुख्य ग्रामीण औद्योगिक केन्द्र वर्ष–2013

क्रम सं0	केन्द्र का नाम	क्रम सं0	केन्द्र का नाम
1	आजमगढ़	32	फरीहा
2	मोहम्मदपुर	33	शम्भूपुर
3	सरायमीर	34	जियनपुर
4	दुर्वासा	35	अजगरामसरकी
5	जिउली	36	रौनापार
6	बनगांव	37	चांदपट्टी
7	मनकाडीह	38	महाराजगंज
8	निजामाबाद	39	मालटाड़ी
9	सिकरौर	40	नेवादा
10	अम्बरपुर	41	शाहगढ़
11	भीरा	42	बेलइसा
12	दरियापुर नेवादा	43	मेहनगर
13	दौलताबाद	44	बद्दोपुर
14	फूलपुर	45	तेरही
15	कन्धरापुर	46	सरदहा
16	गोमाडीह	47	अजमतगढ़

17	बरदह	48	नरमे
18	देवगांव	49	पवई
19	मार्टिनगंज	50	खरीहानी
20	बुढ़नपुर	51	शिकारपुर
21	उम्मरपुर	52	लालगंज
22	सिंहपुर	53	कम्हरीया
23	पकड़ी	54	ठेकमा
24	गम्भीरपुर	55	नंदाव
25	ठेकमा	56	कोयलसा
26	रानी की सराय	57	सठियांव
27	पल्हनी	58	मुबारकपुर
28	बलरामपुर	59	अतरौलिया
29	गोसाई बाजार	60	अहिरौला
30	माहुल	61	फुलवरिया
31	कोटिला	62	संजरपुर

औद्योगिक केन्द्रों का क्षेत्रीय वितरण

विगत पृष्ठों में जनपद आजमगढ़ के ग्रामीण उद्योगों और उनसे सम्बन्धित केन्द्रों के भौगोलिक विश्लेषण से स्पष्ट है (तालिका संख्या–0.3) कि ग्रामीण उद्योगों की स्थापना क्षेत्र में वहीं अधिक हुई है जहां पर निम्नलिखित सुविधायें उपलब्ध रही हैं।

तालिका संख्या–0.3

जनपद आजमगढ़ में ग्रामीण औद्योगिक केन्द्र और उद्योग वर्ष–2013

क्रम सं0	ग्राम	उद्योगों की संख्या	पूँजी निवेश	रोजगार
1	अलाउर टीकर	1	4000	3
2	बलालपुर	1	50000	2
3	सीताराम	2	85000	6
4	सदावर्ती चौक	1	40000	2
5	बेदिया	1	40000	2
6	मोहम्मदपुर	3	100000	7
7	करेनुआ	1	30000	5
8	स्टेशन रोड	1	60000	2
9	सरायमीर	22	1015000	65
10	टिकरियां जगदीशपुर	1	60000	4
11	सुसदि सरायमीर	1	60000	2
12	दूरबासा	1	60000	3
13	गरेरूआ	1	50000	3
14	सदावर्ती	1	70000	2
15	कतारा	1	20000	4
16	दलसिंगार	2	50000	5
17	अराजीबाग	5	222014	14
18	कोट	2	140000	8
19	सिधारी	2	25000	7
20	डिफेंश कालोनी	1	135000	4
21	पाण्डेय बाजार	2	320000	7
22	कदीना खान लीलपुर	1	50000	3
23	सिविल लाइन	1	20000	3
24	ज्योली	8	53000	18
25	लफाया सोफीपुर	1	25000	3
26	हरदासपुर मावापुर	1	55000	3
27	बनगांव	2	110000	6
28	बाजबहादुर	3	120000	10

29	मनिकाडीह	2	96000	5
30	कौड़िया हुसेपुर	1	10000	2
31	गंगेपुर मठियां	1	15000	3
32	खानिका बहरामपुर	1	10000	4
33	हसनपुर	1	15000	3
34	बहरपुर	1	65000	2
35	गंगापुर माफीझांऊ	1	30000	2
36	हुसैनाबाद निजामबाद	5	165000	10
37	बड़हरियां	1	30000	2
38	अम्बरपुर	1	30000	2
39	सिकराउर	1	50000	2
40	निजामबाद	3	130000	8
41	मुसेपुर	1	70000	3
42	भिराखास	4	30000	11
43	अल्लीपुर भिरा	1	6000	2
44	भिरा	2	17000	5
45	मीरा बाजार	1	8000	3
46	इटइली नेवादा	1	60000	3
47	दरियापुर नेवादा	1	62000	3
48	दरिया नेवादा	1	60000	3
49	मीरा	2	123000	6
50	नंदाना	1	230000	4
51	सिखउला	1	109000	9
52	ऐलवाल	1	5000	3
53	कादीपुर दौलताबाद	1	20000	2
54	फूलपुर	8	300000	20
55	कौड़िया टोला	2	58000	5
56	खटरी टोला	1	50000	3
57	मुकेरीगंज	3	205000	10
58	खंडहरपुर	2	49000	5
59	शिकरापुर	1	30000	2
60	खुशहालगांव	1	35000	3
61	चित्तेयपुर	1	35000	3
62	गोमाडीह	2	30000	6
63	बारिध	1	10000	3
64	असऊर टीकर गोमाडीह	1	40000	3
65	देवगांव	1	10000	3
66	अवधादुलारगंज	1	15000	3
67	बालुपुर सरायपालतु	1	35000	3
68	खैरातपुर गोपालपुर	1	50000	8
69	करौली	1	125000	6
70	मार्टिनगंज	2	60000	5
71	महिमापुर निजामबाद	1	50000	2
72	बिग्गीपुर निजामबाद	1	100000	3
73	यहियापुर	1	50000	3
74	बुढ़नपुर	1	135000	5
75	उम्मरपुर सिंहपुर	1	57000	3
76	सिंहपुर	3	190000	9
77	अमऊरा पनडाहा	2	45000	6
78	कटघर लालगंज	1	7000	3

79	मेहनगर	24	329500	72
80	गम्भीरपुर	1	6000	3
81	ठेकमा	2	100000	6
82	बाकीपुर रानी की सराय	1	60000	2
83	रानी की सराय	1	40000	2
84	बेलइसा	2	70000	6
85	न्यू कालोनी पल्हनी	1	55000	3
86	बलरामपुर	1	60000	3
87	बरडीहा	1	10000	3
88	चिलबिलिया गोसाई	1	10000	3
89	सैथाकोली बैजाबरी	1	10000	3
90	गोसाई बाजार	10	273000	31
91	छपरा सुल्तानपुर	1	40000	2
92	दम महुला	1	50000	2
93	भवानीपट्टी पासीपुर	1	30000	2
94	मेरी टीकापुर	1	30000	3
95	बासी जलमेजपुर	1	60000	2
96	चन्दाबरी	2	70000	5
97	गहनीखुर्द टोला	1	60000	5
98	कोटीला	1	30000	1
99	ईदगाह मुरीपार	1	60000	1
100	फरीहा	1	60000	1
101	मगरावां	1	60000	1
102	खुटउली	1	60000	1
103	शम्भरपुर बीबीपुर	2	105000	9
104	मुन्दिरपुर	1	40000	5
105	ताहर किशुन्देपुर	1	20000	5
106	भदौली बाजार	1	170000	3
107	जियनपुर	2	760000	9
108	बेलवाना	1	300000	7
109	चांदपट्टी	1	158000	4
110	अजगरा मशरकी	1	15000	3
111	रौनापार	3	250000	9
112	नेवादा चांदपट्टी	2	155000	14
113	कलहीलेदवारा	1	65000	3
114	इब्राहिमपुर	1	10000	2
115	पश्ती जपती माफी	1	85000	3
116	भीलमपुर छपरा	2	35000	5
117	जैहारा पिपरी टेहरी	1	150000	5
118	महाराजगंज	2	140000	7
119	ईश्वरपुर पवई	4	130000	4
120	रसूलपुर	1	10000	3
121	नेवादा	1	75000	11
122	बेनी बहमौली	1	15000	4
123	शाहगढ़	1	10500	2
124	बेलईसा	1	10500	3
125	करहेनुआ	1	20000	3
126	नरोत्तमपुर	1	12000	3
127	मेहमउनी	1	60000	3
128	करखईया	1	150000	2

129	अजुआ	1	200000	5
130	मकदुमपुर	1	120000	3
131	शेखपुरवा	1	10000	3
132	गुरूटोला	2	46000	6
133	पठखोली	1	20000	3
134	कटोही मेदियापार	2	60000	6
135	बद्दूपुर	1	10000	3
136	रैदोपुर	1	100000	3
137	हीरापट्टी	1	50000	3
138	टेहरी	1	105000	3
139	ताहिरपुर	1	50000	2
140	खालिशपुर	2	50000	6
141	होटल अल्का	1	24000	9
142	बढ़याबडौतरा	1	40000	3
143	नई बाजार सरायमीर	1	40000	3
144	सरदहा	3	455000	12
145	अजमतगढ़	2	121000	5
146	जेगहा	2	22000	8
147	रहमान कटरा	1	40000	4
148	फरीहा	1	40000	3
149	रंगडीहा	1	80000	3
150	लाटघाट	1	10000	3
151	भगवानपुर	1	15000	3
152	बेलकुंडा	1	20000	3
153	उमरपट्टी कंधरापुर	1	25000	4
154	असवनिया	1	5000	3
155	उदियनवा	1	9000	3
156	चेवाता	1	80000	3
157	नर्मे	3	100000	9
158	सुमडीह	1	60000	3
159	फुलेरा	1	60000	3
160	भादो	1	40000	3
161	मिल्कीपुर	1	60000	3
162	पवई	1	40000	3
163	खरीहानी	7	55000	25
164	हसनपुर पीहर	1	170000	5
165	शिकारपुर	1	80000	3
166	गड्डोपुर	2	25000	6
167	कसारा पवई	1	40000	3
168	देवगाव	1	8000	2
169	लालगंज	1	8000	2
170	जगदीशपुर	2	90000	6
171	मुरियार	1	15000	3
172	कम्हरियां	1	80000	3
173	बेलखास ठेकमा	1	70000	3
174	दुबवल	1	90000	3
175	बेनीगौरा	1	15000	5
176	दंडवाल	3	155000	9
177	भरौली	1	27000	3
178	चन्दाभाटी	1	40000	3
179	अनउरा रानी की सराय	1	12000	3

180	भिरा	1	36000	3
181	नन्दावं	1	16000	3
182	घंघक नर्मे	1	6000	3
183	सिकरौर सहवारी	1	18000	3
184	कुर्मी टोला	1	26000	5
185	वेरनाडीह टन्डावा	1	80000	3
186	दिवैत आजमगढ़	1	30000	3
187	रेलवे स्टेशन के पास	1	40000	3
188	कोयलसा	6	72000	17
189	जालन्धरी	1	10000	2
190	मालटारी	1	200000	5
191	मुकेरीगंज	1	70000	3
192	निजामाबाद	1	5000	2
193	कौड़िया टोला	1	12000	3
योग	**193 केन्द्र**	**312**	**13391500**	**944**

1. सेवा केन्द्र के रूप में पहले से ही कस्बों अथवा नगरों का विकास।
2. मुख्य परिवहन मार्गों से सम्बद्धता।
3. आजमगढ़ मुख्यालय को गोरखपुर–वाराणसी, जौनपुर–लखनऊ और मऊ नगरों को जोड़ने वाले मार्गों का विकास।
4. मुख्य मार्गों का पूरक मार्गों से सम्बन्ध।
5. तृतीयक कार्यों का कस्बों, नगरों में पहले से ही केन्द्रीयकरण।
6. विपणन कार्यों का केन्द्रीकरण।
7. विभिन्न केन्द्रों के समीप संसाधनों और श्रम की सुविधा।
8. परम्परागत रूप में मुगल काल से ही औद्योगिक केन्द्रों का विकास।

उपरोक्त कारकों के सन्दर्भ में आजमगढ़ जनपद में ग्रामीण उद्योगों से सम्बन्धित केन्द्रों के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है। मानचित्र संख्या – 0.1 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण औद्योगिक केन्द्रों का वितरण अजमतगढ़ से पल्हनी, रानी की सराय, मुहम्मदपुर होते हुए ठेकमा और लालगंज की ओर अधिक है। उल्लेखनीय है कि इसी क्षेत्र से गोरखपुर–इलाहाबाद और वाराणसी मार्ग जाता है। प्राचीन काल से यह मार्ग गोरखपुर क्षेत्र के कुशीनगर और वाराणसी के सारनाथ को पगडंडी मार्ग के रूप में जोड़ता था। जिससे इसी मार्ग पर भिच्छुओं, ऋषियों के पड़ाव विकसित हो गये थे। जो बाद में चलकर सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हो गये। मुगलकाल में जब बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण हुआ तो इसी मार्ग पर आजमगढ़, अजमतगढ़, रानी की सराय जैसे केन्द्रों की स्थापना की गयी। मुगल शासकों ने अपनी प्रजा की सुविधा के लिए इन केन्द्रों पर बाजार लगवाना शुरू किया और क्षेत्रीय संसाधनों पर आधारित उद्योग धन्धों का भी विकास किया। स्वतंत्रता के बाद ऐसे सभी केन्द्रों में तृतीयक कार्यों का केन्द्रीयकरण हुआ। और क्रमशः विभिन्न प्रकार के छोटे–बड़े उद्योग भी यहां स्थापित हुये, जिनमें अधिकतर स्थानीय आवश्यकता और मांग पर आधारित उद्योगों की प्रधानता रही।

अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक केन्द्रों का दूसरा वितरण प्रतिरूप सठियांव से होते हुए पल्हनी, रानी की सराव, मिर्जापुर, फूलपुर की तरफ मिलता है। इस पर आजमगढ़ और सुल्तानपुर, लखनऊ को जोड़ने वाले राज्यमार्ग की सुविधा के कारण उन केन्द्रों का विकास हुआ है। आजमगढ़ से रानी की सराय से आगे फरीहा, संजरपुर, सरायमीर और फूलपुर जैसे केन्द्र इसी मार्ग पर हैं। इन केन्द्रों का विकास स्थानीय जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विपणन केन्द्र के रूप में किया गया। धीरे–धीरे ऐसे सभी केन्द्र मांगपर आधारित उद्योगों के केन्द्रों के रूप में विकसित हो गये। इन दो क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य औद्योगिक केन्द्र जनपद के उत्तरी–पश्चिमी भाग में हरैया से लेकर, महराजगंज, तहबरपुर, कोयलसा, अहिरौला, मार्टिनगंज औरर दक्षिणी–पूर्वी भाग में जहानागंज, मेहनगर, तरवा और पल्हना में बिखरे हुए हैं, और अधिकांश केन्द्र विकास खण्ड मुख्यालय हैं, जिससे दूरस्थापित होने के कारण इन केन्द्रों का जनपद मुख्यालय अथवा वाह्य नगरों केन्द्रों से सम्पर्क सीमित हैं। परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के विनिमय सम्बन्धी कार्यकलाप कम होते हैं, जिससे किसी भी प्रकार के ग्रामीण उद्योगों का विकास यहां कम हुआ है।

औद्योगिक केन्द्रों के क्षेत्रीय वितरण से यह स्पष्ट होता है कि जनपद आजमगढ़ में औद्योगिक केन्द्रों का वितरण, सघन जनसंख्या और अभिगम्यता के उच्च स्तर से प्रभावित है। क्षेत्र में स्थानीय संसाधनों अथवा कृषि पर आधारित उद्योग धन्धों का विकास अपेक्षाकृत कम हुआ है। मांग पर आधारित उद्योग धन्धों का विकास अपेक्षाकृत अधिक हुआ है। मांग पर आधारित उद्योगों की अधिकता है। क्योंकि पिछड़े अर्थतन्त्र में विभिन्न प्रकार के आर्थिक क्रिया–कलापों के विकास के कारण विभिन्न प्रकार के यन्त्रों उपकरणों की मांग अधिक रही है। जिससे मांग पर आधारित उद्योगों का तेजी से विकास हो रहा है। आवागमन की सुविधा होने के कारण वाह्य औद्योगिक केन्द्रों से इनसे सम्बन्धित संसाधनों को आयात द्वारा पूरा किया जाता है। और स्थानीय स्तर पर उत्पादित सामान प्रायः क्षेत्रीय आवश्यकता को पूरा करने में समाप्त हो

जाता है। इसीलिए इस प्रकार के उद्योगों के विकास की अधिक सम्भावना दिखाई देती है।

ग्रामीण औद्योगीकरण हेतु सरकारी नीतियों के अनुसार केवल आजमगढ़ नगर में ही औद्योगिक स्थान की सुविधा विकसित की गई है। जो निम्नलिखित तालिका संख्या–0.4 से स्पष्ट हैं।

तालिका सं0–0.4

जनपद आजमगढ़ में औद्योगिक स्थान वर्ष–2013

क्रमांक	औद्योगिक इकाई	उत्पादित सामान	कार्यरत मजदूर	कच्चा माल	बाजार क्षेत्र
1	मेगा केबिल इण्डस्ट्रीज	महीन तार्बे का तार	18	तांबा	स्थानीय
2	शोभा इण्डस्ट्रीज	खराद कार्य	08	मशीन	स्थानीय
3	शाहा बैट्री इण्डस्ट्रीज मोटर	बैट्री	20	स्थानीय पदार्थ	आजमगढ़
4.	भारत एल्युमिनियम इण्डस्ट्रीज	बर्तन चादर	70	एल्युमिनियम	स्थानीय
5	गिन्नी इण्डस्ट्रीज बलिया	डनलप टायर की रिंग	20	लोहा इस्तात	स्थानीय
6	डालमिया इण्डस्ट्रीज	साइकिल टायर ट्यूब	40	रबर	स्थानीय
7	अमर ट्रेडिंग कम्पनी	पी0डब्लू डी0 बोर्ड	05	लोहा चादर	स्थानीय
8	हिन्दुस्तान वायर प्रोडक्ट	पाइप फर्नीचर	05	लेहा प्लास्टिक	स्थानीय
9	प्लास्टिक फैक्ट्री	पालिथिन बैग	05	प्लास्टिक	स्थानीय
10	हिन्दुस्तान कन्डक्टर	लोहा चादर	60	एल्युमिनियम तार	स्थानीय

उपरोक्त तालिका संख्या–0.4 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्र आजमगढ़ जनपद में ग्रामीण उद्योगों का विकास अधिकतर कृषि और मांग पर आधारित रहा है। इसमें कृषि पर आधारित उद्योगों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। जिससे स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय संसाधन के रूप में कृषि उद्योगों को विकसित करने में सफल नहीं हुई है। क्योंकि जनसंख्या के अत्यधिक दबाव के कारण केवल खाद्यान्न कृषि की प्रधानता है। औद्योगिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण फसलों का कोई महत्व नहीं है। क्योंकि उनका क्षेत्र और उत्पादन दोनो अत्यन्त कम है। यद्यपि यहां कृषि संसाधन के रूप में दलहन, तिलहन, गन्ना, आलू और अन्य सब्जियां तथा अनेक प्रकार के फल उत्पन्न होते हैं। लेकिन उत्पादन अत्यन्त कम होने के कारण ये सभी पारिवारिक आवश्यकता को भी पूरा नहीं कर पाते। इसीलिए विपणन केन्द्रों के माध्यम से बाह्य क्षेत्रों से इनका आयात करके स्थानीय आवश्यकता को पूरा किया जाता है। इसी तरह स्थानीय स्तर पर वन संसाधन है ही नहीं। क्योंकि वनाच्छादित क्षेत्र कृषि क्षेत्र के रूप में परिवर्तित हो गया है। यद्यपि यहां फर्नीचर उद्योग बहुत विकसित हैं। लेकिन अधिकतर उसके लिए लकड़ी गोरखपुर और मिर्जापुर जनपदों से मंगायी जाती है। पशु संसाधन यहां महत्वपूर्ण हैं। लेकिन विभिन्न आर्थिक राजनीतिक कारणों से पशु संसाधनों पर आधारित उद्योग धन्धों का विकास नहीं हो पाया है। और पशुपालन भी परम्परागत ढंग का है, जिससे सीमित मात्रा में पारिवारिक उद्योग संचालित हैं।

उपरोक्त संसाधनों के सन्दर्भ में जो भी ग्रामीण उद्योग यहां विकसित हैं, उनमें परम्परागत रूप में हथकरघा उद्योग बहुत महत्वपूर्ण है, जो मुगल काल से ही प्रचलित हैं। और अब तक वह संचालित हो रहा है। यह उद्योग भी पारिवारिक अथवा कुटीर उद्योग के रूप में है। जिसमें स्थानीय बुनकर कार्य करते हैं। इनके द्वारा उत्पादित वस्त्रों की मांग अधिक होने के कारण इनके विकास की सम्भावनाएं अधिक हैं। इसी तरह अध्ययन क्षेत्र में इन्जीनियरिंग और मरम्मत सम्बन्धी उद्योग पर्याप्त संख्या में हैं। जो स्थानीय आवश्यकता पर आधारित हैं। कृषि क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के उपकरणों की मांग अधिक होने के कारण मरम्मत एवं कल–पुर्जों के निर्माण सम्बन्धी उद्योग के और अधिक विकसित होने की सम्भावना है।

इसी से सम्बन्धित आटो रिपेयरिंग उद्योग भी विकासशील है। इस तरह विभिन्न प्रकार के ग्रामीण उद्योगों का वितरण सड़क मार्गों के नोडल केन्द्रों पर केन्द्रित हैं। जहां बाजार की सुविधा, आवागमन की सुविधा उपलब्ध है। इस तरह अध्ययन क्षेत्र आजमगढ़ जनपद को ग्रामीण औद्योगीकरण के क्षेत्र में एक पिछड़ा क्षेत्र ही माना जा सकता है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण औद्योगीकरण के क्षेत्रीय प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट होता है कि यहाँ पाये जाने वाले ग्रामीण उद्योग मुख्यतः कृषि और कृष्येत्तर संसाधनों पर आधारित है। सामान्य रूप में इनका वितरण बिन्दुवत प्रतिरूप के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भागों में ही अधिक मिलता है। आजमगढ़ नगर मुख्यालय से जीयनपुर, अजमतगढ़, बिलरियागंज, कोयलसा, आजमगढ़ से रानी की सराय, मोहम्मदपुर, मेहनगर और लालगंज, रानी की सराय से फूलपुर मार्ग पर ग्रामीण उद्योगों का केन्द्रीकरण हैं। इन उद्योगों का यहाँ केन्द्रीकरण परिवहन की सुविधा, बाजार की सुविधा, कच्चे माल के आयात–निर्यात की सुविधा के कारण अधिक हुआ है। उपरोक्त संदर्भ में यह परिकलपना पुष्ट होती है कि परिवहन मार्गजाल की सहायता से ग्रामीण औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पाठक आशुतोष कुमार एवं घनश्याम पाठक (2007): ग्रामीण औद्योगीकरण नियोजन : जनपद बलिया (उ0प्र0) का प्रतीक अध्ययन, उ.भा.भू.प.।*

2. *आर्य, राजेश कुमार (1999): मालवा पठारी प्रदेश में कृषि आधारित उद्योग एवं ग्रामीण विकास, गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध ग्रन्थ।*
3. *फात्मा खुर्शीद (2002): मध्यप्रदेश में कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन–गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध ग्रन्थ।*
4. *Bhatacharya A.S.H.(1980): Rural Industrialization in India: Its Problems B.R. Publishing Co., New Delhi.*
5. *Mishra K.N. ((2008): Agro Industry and Backward Area Development, UBBP. Vol 38 March*
6. *Papola T.S. (1982): Rural Industrialization in India: Approaches & Potentials. Himalaya Publication House*